श्रीमद् भगवद् गीता श्लोक

Contents

प्रथम अध्यायअर्जुन विषाद योगः : 3

द्वितीय अध्यायसांख्य योगः : 46

तृतीय अध्यायकर्म योगः : 120

चतुर्थ अध्यायज्ञान कर्म संन्यास योगः : 166

पंचम अध्यायसंन्यास योगः : 211

षष्ठ अध्यायआत्म संयम योगः : 241

सप्तम अध्यायज्ञान विज्ञान योगः : 286

अष्टम अध्याय अक्षरब्रह्मयोगः : 319

नवम अध्याय राज विद्या राज गुह्य योगः : 350

दशम अध्याय विभूति योगः : 387

एकादश अध्याय विश्वरूप दर्शन योगः : 430

द्वादश अध्याय भक्ति योगः : 485

त्रयोदश अध्याय विभाग योगः क्षेत्र क्षेत्रज्ञ : 504

चतुर्दश अध्याय गुण त्रय विभाग योगः : 537

पंचदश अध्यायपुरुषोत्तम योगः : 565

षोडश अध्यायदैव असुर संपद्विभाग योगः : 587

सप्तदश अध्यायश्रद्धा त्रय विभाग योगः : 609

अष्टादश अध्यायगःमोक्ष संन्यास यो : 638

प्रथम अध्यायः अर्जुन विषाद योगः

(Chapter One: The Yoga of the Dejection(Grief) of Arjuna)

प्रथम अध्यायः कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में सैन्यनिरीक्षण

Chapter One: Observing the Armies on the Battlefield of Kurukṣetra

अथ प्रथमोऽध्यायः

(1.1) Dhṛtarāṣṭra said: O Saṣjaya, after my sons and the sons of Pāṇḍu assembled in the place of pilgrimage at Kurukṣetra, desiring to fight, what did they do?

धृतराष्ट्रः उवाच ।
धर्म-क्षेत्रे कुरु-क्षेत्रे
समवेताः युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाः च एव
किम् अकुर्वत सञ्जय ॥

धृतराष्ट्र ने कहा -- हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे तथा पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया ?